भैयाजी दाणी सेवा न्यास, इन्दौर का त्रैमासिक प्रकाशन

सेवा पथिक

पंजीयन क्र. MPHIN/2012/43472

1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर 2021

(त्रैमासिक पत्रिका)

मालवा प्रांत

वर्ष 10 अंक 4 विक्रम संवत् 2078

‘सेवा ही जीवन, सेवा ही समर्पण, दूसरों के लिए जीना यही भारतीय जीवन दर्शन’

इसी दर्शन को जीवन में साकार करते हुए स्वयंसेवक और सेवा भारती के कार्यकर्ता, समाज को साथ लेकर वंचित, पीड़ित, अभावग्रस्त व अशिक्षित वर्ग के उत्थान के लिए निरंतर सेवारत हैं। सेवित को स्वस्थ, शिक्षित, संस्कारित और स्वावलंबी बनाकर समाज की मुख्यधारा से जोड़कर, समाज का सेवक बनाने का प्रयास अनवरत चल रहा है।

इसी सेवा व समर्पण भाव के साथ सेवा कार्य करते हुए हम कोरोना महामारी की प्रथम व द्वितीय लहर से सुरक्षित बाहर निकलने में सफल हुए। किन्तु अब समय है तीसरी लहर को भी पराजित करने का जो आज हमारी चौखट पर खड़ी है। भले ही हम वैक्सीन के दोनों डोज लगवा चुके हों पर फिर भी हम मास्क पहनें, बार-बार हाथ धोएं, सैनिटाइज करें और शारीरिक दूरी बनाकर रखें। अनावश्यक भीड़ वाली जगह पर जाने से बचें और सुरक्षित रहे।

संपादकीय मण्डल

अपना ये त्यौहार नहीं

इस अंग्रेजी नववर्ष की शुरूआत राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी व्दारा लिखी गई कुछ पंक्तियों के साथ

ये नववर्ष हमें स्वीकार नही
है अपना ये त्यौहार नही
है अपनी ये तो रीत नहीं
है अपना ये व्यवहार नही
धरा ठिठुरती है सर्दी से
आकाश में कोहरा गहरा है
बाग बाजारों की सरहद पर
सर्द हवा का पहरा है
सूना है प्रकृति का आँगन
कुछ रंग नही, उमंग नही
हर कोई है घर में दुबका हुआ
नव वर्ष का ये कोई ढंग नहीं
चंद मास अभी इंतजार करो
निज मन में तनिक विचार करो
नये साल नया कुछ हो तो सही
क्यों नकल में सारी अक्ल बही
उल्लास मंद है जन-मन का
आयी है अभी बहार नहीं
ये नववर्ष हमें स्वीकार नहीं
है अपना ये त्यौहार नही

ये धुंध कुहासा छंटने दो
रातों का राज्य सिमटने दो
प्रकृति का रूप निखरने दो
फागुन का रंग बिखरने दो
प्रकृति दुल्हन का रूप धर
जब स्नेह - सुधा बरसायेगी
शस्य - श्यामला धरती माता
घर घर खुशहाली लायेगी
तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि
नव वर्ष मनाया जायेगा
आर्यावर्त की पुण्य भूमि पर
जय गान सुनाया जायेगा
युक्ति - प्रमाण से स्वयंसिध्द
नव वर्ष हमारा हो प्रसिध्द
आर्यो की कीर्ति सदा - सदा
नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
अनमोल विरासत के धनिकों को
चाहिये कोई उधार नहीं
ये नववर्ष हमें स्वीकार नही
है अपना ये त्यौहार नही
है अपनी ये तो रीत नहीं
है अपना ये त्यौहार नही

महात्मा ज्योतिबा फूले

11/4/1827 - 28/11/1890

''विद्या बिना मति गई, मति बिना नीति गई, नीति बिना गति गई, गति बिना वित्त गया, वित्त बिना शूद गये। इतने अनर्थ अविद्या ने किए।''

ये अनमोल विचार हैं महान समाज सुधारक, समर्पित क्रांतिकारी,ओजस्वी लेखक,विचारक एवं उच्चकोटि के दार्शनिक ज्योतिराव गोविंदराव फूले के जिन्हे संक्षिप्त में ज्योतिबा फूले के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

११ अप्रैल १८२७ को महाराष्ट के सतारा जिले के माली समाज, जो उस समय निम्न जाति के अन्तर्गत आता था, में जन्मे ज्योतिबा ने अपना सम्पूर्ण जीवन दलित उत्थान व महिला शिक्षा को समर्पित किया। समाज के सभी वर्गो को शिक्षा प्रदान करने के वे प्रबल समर्थक थे एवं भारतीय समाज में प्रचलित जाति पर आधारित विभाजन और भेदभाव के विरूध्द थे। समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाने के दृढ़ निश्चय के साथ उन्होंने कन्याओं के लिये सन् १८४८ में विद्यालय खोला जो देश का प्रथम कन्या विद्यालय था। लड़कियों को पढ़ाने के लिये अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने स्वयं पढ़ाया तथा अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई को स्वयं शिक्षित कर इस योग्य बनाया। सावित्रीबाई फूले भारत की पहली महिला अध्यापिका थी। दोनों पति-पत्नी कर्मठ और समाजसेवी की भावना रखने वाले व्यक्ति थे।

१८८३ में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने के महान कार्य के लिये उन्हे तत्कालीन ब्रिटिश सरकार व्दारा ''स्त्री शिक्षण के आद्यजनक'' कहकर गौरांवित किया।

समाजसेवा के प्रति कर्मठता देखकर ज्योतिबा फूले को ''महात्मा'' की उपाधि दी गई। महात्मा फूले जीवन भर समाज में व्याप्त बुराईयों से लड़ते रहे।

इस वर्ष २८ नवंबर को उनकी १३१ वीं जयंती मनायी गई। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनके व्दारा दी गई शिक्षा एवं उनके व्दारा दिखाया मार्ग हमारे लिये पथ प्रदर्शक का कार्य कर रहा है।

पद्म पुरस्कार से सम्मानित हुए धरती के योद्धा

८ नवंबर २०२१, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा ११९ लोगों को पद्म पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें से कुछ नामों से हर कोई परिचित है, लेकिन कुछ ऐसे चेहरे और तस्वीरें समाज के सामने आईं, जिन्हें पहले शायद ही कोई जानता होगा, लेकिन आज ये शक्ति, सम्मान और नए भारत की तस्वीर बन गई हैं।

तुलसी गौड़ा: पद्मश्री

बेहद सरल, कर्नाटक की ७२ वर्षीय आदिवासी महिला तुलसी गौड़ा कभी स्कूल नहीं गईं, लेकिन पौधों और जड़ी-बूटियों के ज्ञान के चलते उन्हें इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फॉरेस्ट कहा जाता है। उन्होने फॉरेस्ट डिपार्टमेंट में अस्थायी रूप से सेवायें भी दीं और आज भी अपने ज्ञान को नई पीढ़ी के साथ बॉट रही हैं। वे अब तक ३० हजार से भी ज्यादा पौधे रोप चुकी हैं। पर्यावरण के संरक्षण में उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

हरेकाला हजब्बा: पद्मश्री

संतरे बेचकर रोजाना १५० रुपए कमाने वाले मंगलोर के ६८ वर्षीय हरेकाला हजब्बा के गांव न्यूपडपू में कई साल तक कोई स्कूल नहीं था। गांव का कोई बच्चा शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहा था। ऐसे में हरेकाला ने साल २००० में अपनी जिंदगीभर की कमाई लगाकर एक एकड़ जमीन पर बच्चों के लिए एक प्राइमरी स्कूल बनाया। आज इस स्कूल में कक्षा दसवीं तक १७५ बच्चे पढ़ते हैं।

मोहम्मद शरीफ: पद्मश्री

अयोध्या के रहने वाले ८३ साल के साइकिल मैकेनिक मोहम्मद शरीफ को यह पुरस्कार समाज कल्याण के लिए दिया गया है। शरीफ चाचा के नाम से मशहूर मोहम्मद शरीफ ने अब तक २५ हजार से भी ज्यादा लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार किया है। उन्होंने सिर्फ हिंदू और मुस्लिम ही नहीं, बल्कि सभी धर्मों के लोगों के मृत शरीरों का उनके धार्मिक रिवाजों के मुताबिक अंतिम संस्कार किया है।

राहीबाई सोमा पोपेरे: पद्मश्री

बीज माता या सीड मदर के नाम से जानी जाने वाली राहीबाई महाराष्ट्र के अहमद नगर की महादेव कोली आदिवासी जनजाति की किसान हैं। उन्होंने अपने परिवार से खेती की पारंपरिक विधियां और जंगल के संसाधनों का ज्ञान एकत्र किया। उन्होंने देशी बीज तैयार करना और उन्हें दूसरों को बांटना शुरू किया। पूरे महाराष्ट्र में घूम - घूमकर देशी बीजों का संरक्षण करने का अभियान शुरू किया। यहीं से उन्हें बीज माता का नाम मिला।

हिम्मताराम भांभू जी: पद्मश्री

राजस्थान के नागौर जिले के रहने वाले हिम्मताराम भांभू पिछले २५ साल से पेड़ों के संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं। राजस्थान के कम पेड़ वाले जिलों में वे अब तक साढ़े पांच लाख पौधे रोप चुके हैं। पर्यावरण को समर्पित इस अहम योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया।

तेजस्विनी - भारत को अलौकिक करने वाली सुकन्यायें

रविवार का दिन, चिमनबाग का मैदान, लगभग ३००० दर्शकों की उपस्थिती एवं ४३२ किशोरी बहनों का लगातार चलने वाला कौशल प्रदर्शन। यह दृश्य था १९ / १२ / २०२१ को हुए इन्दौर विभाग व्दारा संचालित निवेदिता प्रकल्प के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का।

नूतन विद्यालय के मैदान में तालियों की गड़गड़ाहट, भारत माता की जय के नारों एवं जोश और उमंग से भरी मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को उपस्थित दर्शकों की भरपूर सराहना मिली। कार्यक्रम में समता योग, पिरामिड, अखाड़ा, कराटे एवं सामूहिक व्यायाम योग का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के साथ ही सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की लयबध्द तरीके से प्रस्तुति दी गई। निर्विरोध एक घण्टा चलने वाले इस कार्यक्रम की उपस्थित अतिथियों ने भूरी भूरी प्रशंसा की।

ज्ञातव्य है कि निवेदिता प्रकल्प किशोरी बहनों के लिए चलने वाला साप्ताहिक प्रकल्प है। इन्दौर महानगर में निवेदिता के कुल ५८ प्रकल्प बस्तियों में संचालित होते हैं, जिनमें १२ वर्ष से लेकर महाविद्यालयीन बालिकाएं सम्मिलित होती हैं। जहां एक ओर इनके शारीरिक, मानसिक व बौध्दिक विकास तथा स्वावलंबन के कार्य होते हैं वहीं दूसरी ओर इन्हे भारतीय संस्कृति व सामाजिक समरसता के अनुरूप ढ़लना सिखाया जाता है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उद्योगपति श्रीमति रीना जैन ने बच्चों की शिक्षा के साथ - साथ संस्कार और धर्मशिक्षा के प्रशिक्षण को भी महत्वपूर्ण बताया। विशेष अतिथी उप महाधिवक्ता उच्च न्यायालय, इन्दौर श्रीमति अर्चना खैर ने बालिकाओं की अच्छी शिक्षा के साथ साथ आत्म - रक्षक, संस्कार व स्वावलंबन के प्रशिक्षण पर बल दिया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता प्रांत उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद श्रीमति माला ठाकुर थीं जिन्होंने सभी बहनों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। स्वजागरण, स्वसंस्कृति व स्वदेशी की भावना के साथ अधिक से अधिक बहनों को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। कार्यक्रम में ४८ बस्तियों से लगभग ४३२ बहनों ने भाग लेकर एक नया इतिहास रचा है।

कबड्डी प्रतियोगिता

वनवासी सशक्तिकरण केन्द्र बड़ा घोसलिया, मेघनगर के तत्वाधान में कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अत: ऐसे आयोजनों में ग्रामीण क्षेत्रों की कई टीमें उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करती हैं।

सेवा भारती द्वारा समय समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक खेल में सहयोग और संघर्ष का अनूठा संगम होता है। खेलों से जीवन में अनुशासन, सामंजस्य, हम की भावना, सहयोग, संघर्ष, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता तथा शा़रिरीक.एवं मानसिक क्षमता का विकास होता है।

इस वर्ष कबड्डी प्रतियोगिता में झाबुआ जिले की १९ टीमों ने भाग लिया। प्रथम विजेता टीम सहारा क्लब रंभापुर एवं द्वितीय विजेता माँ शीतला क्लब, छोटा गुड़ा रही। खिलाड़ियों व दर्शकों को प्रान्त प्रमुख, जनजाति विकास मंच एवं विभाग प्रचारक, रतलाम का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

हम भी किसी से कम नहीं

''विश्व विकलांग दिवस'' के अवसर पर केशव सेवा धाम दिव्यांग आश्रम, खण्डवा में संस्था स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

विभिन्न वर्गो में हुई प्रतियोगिताओं में प्रथम व द्वितीय आये आश्रम के बच्चों ने फिर जिला स्तर पर कार्यक्रम में भाग लिया।

जैविक खेती-किसान कल्याण तथा कृषि विकास

बड़ाघोसलिया, मेघनगर में द्विदिवसीय जैविक कृषि प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हुआ। ६ सत्रों में लगे इस वर्ग में कृषि के विभिन्न

आयामों पर ध्यान केंद्रित किया गया। उद्घाटन में रसायनिक खेती के दुष्परिणाम विषय पर चर्चा हुई।

- द्वितीय सत्र में किसान एवं गौमाता विषय पर चर्चा की गई।
- तृतीय सत्र में किसानों को शासकीय योजनाओं के बारें में विस्तार से जानकारी दी गई।
- चतुर्थ एवं पंचम सत्र में विभिन्न प्रकार की जैविक खाद, टॉनिक, कीटनाशक, कीट नियंत्रक, आदि बनाने का प्रायोगिक अभ्यास कराया गया।
- अंतिम सत्र में जैविक कृषि के लाभ बताते हुए सभी किसानों से जैविक कृषि करने का आग्रह किया गया।

स्वाभिमान से जीने का मार्ग प्रशस्त करना हमारा लक्ष्य है

१८ नवम्बर २१,माई मंगेशकर सभागृह में, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री पराग जी अभ्यंकर द्वारा सेवा दाता ऐप को लांच किया।

'सेवा भाव हमारी संस्कृति हमारी माटी में ही है। सेवा प्राप्त करने वाला यह सोचे कि जो व्यक्ति सेवा दे रहा है वह मेरे परिवार का सदस्य है क्योंकि वह मेरा सहयोग करके मेरा जीवन आसान बना रहा है। इसी प्रकार यदि सेवा देने वाला व्यक्ति भी यह सोचे कि श्रम करना ही उसकी पूजा है और यदि वह किसी के घर में सेवा प्रदान कर रहा है तो इससे उसकी शुद्धता पवित्रता भी बनी रहेगी'

यह आपसी सेवा भाव ही है जिससे राष्ट्र संगठित होगा।

सेवा भारती इंदौर ने सेवा प्रदाता व सेवा लेने वालों के मध्य सेवादाता ऐप लॉन्च करके एक सेतु का निर्माण किया है। वर्तमान में इस ऐप में ६८ प्रकार की स्किल्स को सम्मिलित किया गया है। समाज की आवश्यकता अनुसार अन्य स्किल्स को भी जोड़ा जाएगा। अभी तक ८०० सेवा प्रदाताओं का पंजीयन हो चुका है।

ये सेवा प्रदाता हमारी दैनिक आवश्यकताओं के अभिन्न अंग हैं। किंतु उचित संपर्क के अभाव में इन्हें ज्यादातर बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। आम जीवन से जुड़े कार्यों के लिए सेवा दाता ढूंढने की परेशानी को कम किया गया इस सेवादाता ऐप ने। राष्ट्रीय एकात्मता, बंधुता, समरसता का भाव प्रबल करने में मील का पत्थर साबित होगी 'सेवा दाता'।

नवीन प्रकल्प - मातृछाया रतलाम

अहंकार नहीं अपितु परोपकार करना हमारी संस्कृति है

मातृछाया की संकल्पना एक ऐसे शिशु संरक्षण गृह के रूप में की गई है जहां पर नवजात, अबोध एवं परित्यक्त शिशुओं के सम्यक पालन पोषण हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को एक छत के नीचे सुनिश्चित किया जा सके। जो सक्षम है उसे भी जीवन जीने का अधिकार है और उसके इस अधिकार की सुरक्षा करने का उत्तरदायित्व सर्व समाज का है। इस विचारधारा के साथ, राष्टीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री पराग जी अभ्यंकर व्दारा मातृछाया,रतलाम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि वरिष्ठ स्त्री रोग चिकित्सक डॉ. आशा सराफ ने मातृत्व एवं निराश्रित बच्चों के इस प्रकल्प की प्रशंसा करते हुए आर्थिक सहायता भी प्रदान की।

योध्दा सैन्य प्रशिक्षण

देवास विभाग व्दारा महू में सेना में भर्ती के लिए पूर्व तैयारी हेतू सैन्य प्रशिक्षण केन्द्र प्रारंभ किया गया, जिसमें महू जनजाति क्षेत्र के २० प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनके आवास, भोजन, व शिक्षा की पूर्ण व्यवस्था सेवा भारती व्दारा की गई। प्रशिक्षण, सेवा निवृत्त सेना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में विद्याभारती, जनजाति छात्रावास गवली पलासिया महू पर दिया गया।

9 माह के प्रशिक्षण के पश्चात् अगली बैच प्रारंभ की जाएगी तथा प्रशिक्षण की यह श्रृंखला निरंतर चलेगी।

महिला सशक्तिकरण

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में समय समय पर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण वर्ग लगाए जाते है।

सेवा भारती देवास व्दारा गंगा निकेतन बस्ती में बहनों को एल ई डी बल्ब बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।

अब शिक्षित होंगे सभी

घुमंतू जनजातियाँ निरंतर भौगोलिक गतिशीलता बनाए रखते हैं। आज भी देश के कई हिस्सों में हम घुमंतुओं को अपने जानवरों के साथ आते जाते देख सकते है। किन्तु ऐसी स्थिति में इनके बच्चों का शिक्षण प्रभावित होता है। नियमित विद्यालय ना जाने से उनके शिक्षा के साथ - साथ अनुशासन एवं संस्कारों का भी अभाव रहता है। यहां तक कि यह बच्चे अनुसूचित जाति जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्गों के बच्चों से भी बराबरी नहीं कर पाते।

ऐसे समुदायों के बच्चों को शिक्षित करने और शिक्षा के प्रति उन बच्चों के माता पिता को जागरूक करने की दिश में सेवा भारती उज्जैन ने एक सराहनीय पहल की है। कोलू खेड़ी गांव, उज्जैन में कालबेलिया समाज रहता है। समाज के लोग जीवन यापन करने के लिए अलग-अलग स्थानों पर घूमते हैं। ऐसी स्थिति में इनके बच्चों का शिक्षण प्रभावित होता है। इन बच्चों के लिए कोलू खेड़ी क्षेत्र में कोचिंग केन्द्र प्रारंभ किया गया है, जहां प्रतिदिन सेवा भारती के कार्यकर्ता इन बच्चों को शिक्षण करवाएंगे ताकि पढ़ लिख कर यह बच्चे भी बेहतर समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

हमारा अभियान - स्वस्थ, सुखी, सानंद रहे सब

प्राकृतिक आहार विहार, नित्य व्यायाम, शारीरिक आंतरिक स्वच्छता व सफाई पर निर्भर चिकित्सा ही प्राकृतिक चिकित्सा है। शरीर में पंच तत्वों के संतुलन को किस प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा पध्दति के व्दारा पुन:संतुलित किया जा सकता है इस पर विचार व्यक्त किए डॉ.गिरधर पटेल ने। स्वास्थ्य सेवा मंदिर, आगर में लगे एक दिवसीय प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण शिविर में आगर से पधारे डॉ. पटेल ने प्राकृतिक चिकित्सा व्दारा महत्वपूर्ण रोग एवं उनके उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी दी, साथ ही लगभग १०० लोगों को नि:शुल्क परामर्श भी दिया गया।

वेंटीलेटर उपलब्ध कराया

कोरोना की दूसरी लहर में जीवन रक्षक उपकरणों की कमी को देखते हुए शासन के साथ साथ समाजसेवी संस्थाओं व्दारा भी इन कमियों को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है।

कोरोना काल में वेंटीलेटर को दृष्टिगत रखते हुए देवास विभाग ने प्राइम अस्पताल को उसके सेवा कार्यो को ध्यान में रखते हुए एक वेंटीलेटर भेंट किया। उज्जैन विभाग व्दारा भी लगभग १५ लाख मूल्य के दो वेंटीलेटर चैरिटेबल अस्पताल को भेंट किए गए।

सेवा कार्यो का संगम

सेवा भारती स्वयंसेवी संस्थाओं को साथ में लेकर, समाज में एकता और समरसता का कार्य करती। यह सभी संस्थाएं समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन सभी संस्थाओं को एक ही मंच पर लाने का प्रयास किया जगन्नाथ जिला इन्दौर ने। इस सेवा संगम का प्रयास था विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं के अच्छे कार्यो को जनता के सामने लाना। साथ ही जहां संगम होता है वहां समरसता का भाव उत्पन्न होता है, और एक ही मुच पर आने से बहुत सारी समस्याओं का समाधान आसानी से हो जाता है। २ अक्टूबर २०२१ महादेवी पुस्तकालय में संपन्न हुए इस सेवा संगम में २९ संस्था सेवा संस्थानों से ६५ कार्यकर्ता उपस्थित थे। प्रांत सेवा प्रमुख श्री योगेश शर्मा की उपस्थिति में सभी संस्थाओं ने अपनी गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। जब सभी एक लक्ष्य लेकर चल रहे हैं तो मिलते रहने से सौहाद्र एवं समन्वय बना रहता है, अत: यह सेवा संगम अपने कार्यो के लिए प्रेरणा एवं दिशा दोनों में सहायक होते है।

युवा और सेवा

महाविद्यालयी छात्र सम्मेलन

भारत सबसे अधिक युवा जनसंख्या वाला देश है। युवा वर्ग हमारे देश के उज्जवल भविष्य का प्रतीक हैं जिन्होने हर क्षेत्र में चाहे वह तकनीकी हो, खेलकूद हो या व्यापार हो, अपना परचम लहराया है। आज इस युवा शक्ति के कारण भारत विश्व गुरू बनने की दिशा में अग्रसर है।

इस युवा शक्ति का रूझान सेवा कार्यो में भी बनाये रखने के उद्देश्य से इन्दौर महानगर के अलग अलग जिलों में महाविद्यालयी छात्र - छात्रा सम्मेलन किया गया । बड़ी संख्या में छात्रों की इसमें सहभागिता रही। सेवा भारती के कार्यो के साथ साथ सेवा कार्यो में वे कैसे योगदान कर सकते है, इस पर उनका मार्गदर्शन किया गया । ४२ छात्र छात्राओं ने संकल्प पत्र भर कर सेवा कार्यो हेतु अपनी सहमति भी दी । वर्तमान में भी

सेवा भारती व्दारा संचालित विभिन्न केन्द्रों पर यह युवा शक्ति अपना सहयोग दे रही है।

जनजाति गौरव दिवस, झाबुआ

१५ नवंबर, २०२१ को भगवान बिरसा मुंडा जयंती के अवसर पर भोपाल में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र जी मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की उपस्थिति में जनजाति गौरव दिवस धूमधाम से मनाया गया। अपनी संस्कृति की झलक आम जनता तक पहुंचाने के उद्देश्य से सेवा भारती झाबुआ मे विशेष रूप से तैयार की गई जैकेट एवं तीर कमान को यहां प्रदर्शित किया गया जो सभी के आकर्षण का केन्द्र बनी रही।

स्वयं सहायता समूह लाभांश वितरण समारोह

सेवा कार्यों के माध्यम से संस्कार देने के कार्य में जुटी सेवा भारती आर्थिक स्वावलम्बन के साथ सामाजिक कार्यों से गरीबों की मदद करने में, महिला स्वयं सहायता समूह के माध्यम से अहम भूमिका निभा रही है। लगभग २२ वर्षों से किसी भी बैंक सहायता के बिना ये समूह सफलता पूर्वक कार्यरत है। ये स्वयं सहायता समूह रोजगार में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं। बद्रीनाथं माँ विंध्यवासिनी के जिले के द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह जय भारत एवं माँ विंध्यवासिनी के लाभांश से पुरस्कार वितरण किया गया। कार्यक्रम में प्रत्येक सदस्य को सोने का पेंडल भेंट में दिया गया। कार्यक्रम में सफाईकर्मी माता व बहनों का समूह द्वारा शॉल श्रीफल तथा अम्बेडकर जी की प्रतिमा कर सम्मान किया गया।

स्वयंसेवकों ने बढ़ाए मदद के लिए हाथ

'जहाँ कोई नहीं, वहाँ हम' के कथन को सार्थक किया स्वयंसेवक ने।

देवी अहिल्या की नगरी इंदौर की अंतरात्मा को झकझोर देने वाली यह घटना है शहर के व्यस्ततम क्षेत्र रीगल तिराहे की। DIG कार्यालय के पास एक युवक गंभीर जख्मी हालत में पड़ा हुआ था। वहां से निकलने वाले हजारों लोगों ने उसे देखा लेकिन मदद के लिए कोई भी आगे नहीं आया। वहां से गुजर रहे स्वयंसेवक हितेश शर्मा की नजर जब उस पर पड़ी तो हितेश शर्मा ने अपने साथियों दीपक चौहान और जितेंद्र गुप्ता की मदद से उसे एम्बुलेंस से एम. वाय. अस्पताल पहुंचाया। साथ ही पीड़ित युवक के भोजन का भी प्रबंध किया और किसी भी तरह की अन्य सहायता के लिए अपने नंबर भी दिया। युवक बड़वाह का रहने वाला था और किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित था। परिजनों ने इलाज के लिए अरविंदो अस्पताल में भर्ती कराया था, लेकिन पैसे खत्म होने के कारण अस्पताल प्रबंधन ने इलाज करने से मना कर दिया। इसके बाद से वह ठंड में करीब ४ दिनों से डीआईजी ऑफिस के बाहर पड़ा हुआ था। उसके खुले जख्मों पर मक्खी मच्छर बैठ रहे थे और वह दर्द से तड़प रहा था। ऐसे मे स्वयंसेवक एक बार फिर सेवा के लिए आगे आए और उस व्यक्ति की हरसंभव मदद की।

मानव सेवा को समर्पित-श्री अशोक जी नायक

कभी कभी मन में आया एक छोटा सा विचार भी संपूर्ण जीवन की रूपरेखा बदल देता है। ऐसा ही कुछ हुआ इंदौर शहर के निवासी अशोक नायक के साथ। एक छोटे से कमरे में सिलाई करते करते इसयुवक को रक्तदान का ऐसा पागलपन सवार हुआ कि देखते ही देखते यह एक उदाहरण बन गया।

अस्पताल में मरीजों के परिजनों को रक्त के लिए भटकते देख उनके मन में विचार आया कि क्यों ना एक ऐसी व्यवस्था बनाई जाए कि लोगों को रक्त के लिए भटकना न पड़े।

रेड क्रॉस एवं दामोदर युवा संगठन के सहयोग से संचालित भारत का पहला 'नि:शुल्क ब्लड कॉल सेंटर' मानव सेवा को समर्पित एक ऐसा संस्थान है जिसके अथक प्रयासों से अब तक लगभग ५ लाख लोगों को नि:शुल्क रक्तदान कराया जा चुका है। संस्था के अध्यक्ष अशोक नायक और ४ लाख लोगों का उनका परिवार सतत् इस काम को आगे बढ़ाने में लगे हैं।

यह ४ लाख सदस्य एक फोन पर कहीं भी, किसी के लिए भी रक्तदान करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

कोरोनाकाल में भी लगभग ४५० जरूरतमंद लोगों को प्लाज्मा दान करके टीम ने एक नया कीर्तिमान रचा। संस्थान का अगला लक्ष्य शहर के साथ छोट. छोटे गांवों व कस्बों में रक्तदान के प्रति जागरूकता एवं रक्त की कमी को पूरा करने का हैं।

रसोई घर हमारी सबसे बड़ी वैद्यशाला है और गृहिणी हमारी वैद्य जो भोजन में अनेक मसालों का उपयोग कर हमें स्वस्थ्य रखने का प्रयास करती है।

भारतीय रसोईघर विश्व की सबसे उत्तम रसोईयों में से एक है, जहां उपयोग किये जाने वाले विभिन्न खाद्य पदार्थ और मसालों में अद्भुत औषधीय गुणों वाले तत्व हैं। इनका यह औषधीय महत्व हमारे पूर्वजों को पता था। इसलिये इनका सही उपयोग करके उन्हे स्वस्थ्य व दीर्घायु जीवन प्रप्त हुआ।

किन्तु आज की भागमभाग जिन्दगी में लोग इनको उपयोग में लाने से कतराते है। स्वास्थ्य की जगह समय बलवान हो गया हैं। समय बचाने के लिये लोग शॉर्टकट के रूप में दवाईयां खाना ज्यादा सुविधाजनक समझने लगे हैं जबकि आपकी रसोई में ही कितने सारे रोगों की चमत्कारिक औषधियाँ उपलब्ध हैं। यह सब खाने का स्वाद तो बढ़ाते ही हैं साथ ही हमारे शरीर को स्वस्थ्य और निरोगी रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

आईये, इनका परिचय आपको भी करा दें -

- अजवाइन, अदरक व मैथी दाना पेट दर्द में अत्यंत उपयोगी हैं।
- लौंग का प्रयोग विशेषकर दांतों के दर्द में होता है।
- एक चुटकी सोड़ा पानी में मिलाकर पीने से पेट के दर्द में राहत मिल जाती हैं।
- हल्दी चोट के दर्द और सूजन को कम करने में सहायक होती हैं।
- मेथी के लड्डू जोड़ो के दर्द में लाभकारी है तो कान के दर्द में प्याज का रस।
- शारीरिक दर्द के लिए लहसुन का तेल अति उत्तम हैं।
- धनिया के सेवन से किडनी से संबंधित समस्या दूर होती है।
- जीरा, अजवाईन, काला नमक और पुदीना पाचन क्रिया बढ़ाते है।
- थॉयराइड होने पर प्याज अत्यंत लाभकारी हैं।
- सरसों का तेल कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से रोकता है।
- काली मिर्च जठराग्नि को बढ़ाती हैं।
- तेजपत्ता शुगर को नियंत्रित कर इंसुलिन को बढ़ाता हैं।
- दालचीनी शरीर में बनने वाली इंसुलिन को बढ़ा देती हैं।
- गर्मी से बचाव के लिए मटके में भरे शीतल जल से अच्छा कोई दूसरा उपाय नहीं।
- लू लगने पर प्याज का रस लाभदायक होता हैं।
- बालों का कई समस्याओं में भी प्याज का रस लाभकारी सिध्द हुआ हैं।
- मूली व प्याज का रस पीलिया के रोगी के लिए फायदेमंद होता हैं।
- अदरक, शहद व काली मिर्च का मिश्रण सर्दी जुकाम व खॉसी का अचूक इलाज हैं।

उपरोक्त तो मात्र कुछ उदाहरण हैं, ऐसी अनगिनत औषधियाँ हमारे रसोई घर में उपस्थित हैं। अच्छी सेहत आपकी पूंजी है। अत: दवा को अपना भोजन मत बनाइए, अपितु भोजन को अपनी दवा बनाईये

सावित्रीबाई फुले
भारत की प्रथम महिला अध्यापिका
जन्मदिवस: ३ जनवरी

गुरु गोबिन्द सिंह
दशम सिख गुरु, खालसा के संस्थापक
जन्मदिवस: ९ जनवरी

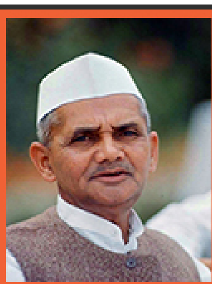

लालबहादुर शास्त्री
भारत के द्वितीय प्रधानमन्त्री एवं स्वतन्त्रता सेनानी
पुण्य तिथि: ११ जनवरी

स्वामी विवेकानन्द
महान भारतीय हिन्दू सन्यासी व दार्शनिक
जन्मदिवस: १२ जनवरी

सुभाषचंद्र बोस
भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी
जन्मदिवस: २३ जनवरी

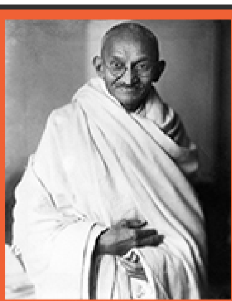

महात्मा गांधी
राष्ट्र पुरुष
पुण्य तिथि: ३० जनवरी

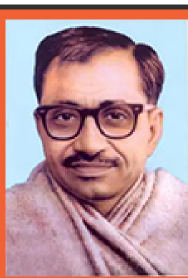

प॰ दीनदयाल उपाध्याय
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चिन्तक और संगठनकर्ता
पुण्य तिथि: ११ फरवरी

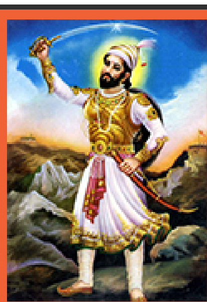

छत्रपति शिवाजी भोसले
मराठा साम्राज्य के संस्थापक
जन्मदिवस: १९ फरवरी

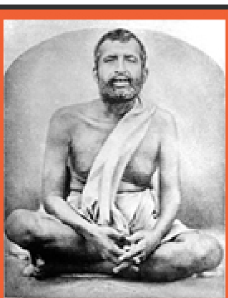

रामकृष्ण परमहंस
अदभुत संत व मानवता के पुजारी
जन्मदिवस: १९ फरवरी

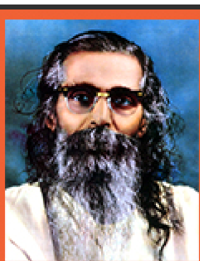

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक
जन्मदिवस: १९ फ़रवरी

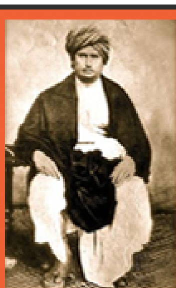

स्वामी दयानन्द सरस्वती
आर्य समाज के संस्थापक व समाज.सुधारक
जन्मदिवस: २६ फरवरी

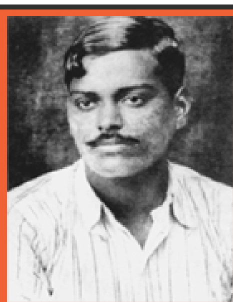

चंद्रशेखर आजाद
महान क्रांतिकारी
शहीद दिवस: २७ फरवरी

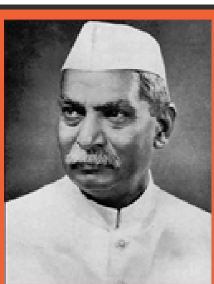

डॉ राजेन्द्र प्रसाद
भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं महान स्वतंत्रता सेनानी
पुण्यतिथि: २८ फरवरी

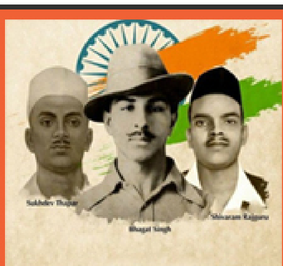

सरदार भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव
स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी
शहीद: २३ मार्च

जनवरी, फरवरी व मार्च माह के मुख्य व्रत, त्यौहार व दिवस

१३ जनवरी *लोहड़ी*
१४ जनवरी *मकर संक्रांति एवं पोंगल*
२६ जनवरी *गणतंत्र दिवस*
८ फरवरी *माँ नर्मदा जयन्ती*
१ मार्च *महाशिवरात्रि*
१७ मार्च *होलिका दहन*